❁ 15 सितम्बर 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

✺ ज्ञान-

1] यह नैचुरल कैलेमिटीज तुम्हारी मददगार बनती है। इस बेहद के दुनिया की सफाई के लिए जरूर कोई मददगार चाहिए।

2] बाप की भी आत्मा में ज्ञान है, वह जब शरीर धारण करते हैं तब ज्ञान देते हैं। जरूर उनमें नॉलेज है तब तो नॉलेजफुल गॉड फादर कहा जाता है। वह सारे सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जानते हैं। अपने को तो जानते हैं ना। और सृष्टि चक्र कैसे फिरता है वह भी नॉलेज है इसलिए अंग्रेजी में नॉलेजफुल अक्षर बहुत अच्छा है। मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ का बीजरूप है तो उनको सारी नॉलेज है।

3] हर एक बच्चे का हक है जीवनमुक्ति। तो बच्चों की बुद्धि चलनी चाहिए कि सब जीवनबन्ध में हैं, इन्हें जीवनबन्ध से जीवनमुक्त में कैसे ले जायें? पहले शान्तिधाम में जायेंगे फिर सुखधामें । सुखधाम को जीवनमुक्ति कहेंगे।

4] सारा ज्ञान गीता का इस बैज में है। कोई को पूछने की भी दरकार नहीं रहेगी कि क्या करना है।

5] अब बाप समझाते हैं,– मुझे याद करो, अन्त मती सो गति हो जायेगी। बाप के पास परमधाम में चले जायेंगे। उनको कहते हैं मुक्तिधाम, शान्तिधाम और फिर सुखधाम। यह है दु:खधाम। ऊपर से हर एक सतोप्रधान फिर सतो, रजो, तमो में आते हैं। एक जन्म होगा तो उसमें भी इन 4 स्टेजेस को पायेंगे। कितना अच्छा बच्चों को बैठ समझाते हैं, फिर भी याद नहीं करते। बाप को भूल जाते हैं, नम्बरवार तो हैं ना। बच्चे जानते हैं नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार रूद्र माला बनती हैं।

6] दुनिया में चाहे कोई कितने भी बड़े नेता हो, अभिनेता हो, वैज्ञानिक हों लेकिन अल्फ को नहीं जाना तो क्या जाना ! आप निश्चयबुद्धि हो फलक से कहते हो कि तुम ढूढ़ते रहो, हमने तो पा लिया।

7] जो सदा खुशहाल रहते हैं वही स्वयं को और सर्व को प्रिय लगते हैं।

✺ योग-

1] बाप के साथ योग लगाने से आत्मा पतित से पावन बन जायेगी। भारत का प्राचीन योग मशहूर है। योग अर्थात् याद। बाप भी कहते हैं मुझ बाप को याद करो। यह कहना पड़ता है। लौकिक बाप को कोई कहना नहीं पड़ता है कि मुझे याद करो। बच्चे आटोमेटिकली बाबा-मम्मा कहते रहते हैं। वह है लौकिक मात-पिता, यह है पारलौकिक, जिसका गायन है– तुम्हारी कृपा ते सुख घनेरे।

2] बाप से वर्सा लेना है तो जरूर बाप को याद करना है।

3] तुम लड़ते हुए भी सारी दुनिया से गुप्त हो। तुम्हारी लड़ाई देखो कैसी है। इसको कहा जाता है योगबल, सारी गुप्त बात है। इसमें कोई को मारने की दरकार नहीं है। तुमको सिर्फ बाप को याद करना है।

4] बाप तो कहते हैं– बच्चे, याद से ही तुम मायाजीत बनेंगे।

✺ धारणा-

1] मीठे बच्चे– ज्ञान का तीसरा नेत्र सदा खुला रहे तो खुशी में रोमांच खड़े हो जायेंगे, खुशी का पारा सदा चढ़ा रहेगा।

2] मीठे-मीठे बच्चों, बाप को याद करते रहो। लक्ष्य मिल गया फिर भल कहाँ भी जाओ। विलायत में जाओ, 7 रोज कोर्स किया तो बहुत है। बाप से तो वर्सा लेना ही है। याद से ही आत्मा पावन बनेगी। स्वर्ग का मालिक बनेंगे। यह लक्ष्य तो बुद्धि में है फिर भल कहाँ भी जायें।

...2

3] सृष्टि का चक्र भी बुद्धि में रखना है। बाप और वर्से को याद करना है। दैवीगुण भी धारण करने हैं। जितना धारणा करेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे।

4] अभी तुम बच्चे समझते हो कि विनाशी कमाई के पीछे जास्ती टाइम वेस्ट नहीं करना है। वह तो सब मिट्टी में मिल जायेगा।

5] योगबल से तुम सारे विश्व पर विजय पाते हो, पवित्र भी बनना है इन लक्ष्मी-नारायण जैसा।

6] प्रवृत्ति में रहते पवित्रता के स्वधर्म को अपना लिया तो पवित्र आत्मा विशेष आत्मा बन गयें।

✺ **सेवा-**

1] बाबा कहते उनके लिए तुम ऐसे-ऐसे बड़े चित्र बनाओ जो वह दूर से ही देखकर समझ जाए। यह गोले का (सृष्टि चक्र का) चित्र तो बहुत बड़ा होना चाहिए। यह है अन्धों के आगे आइना।

2] बाप समझाते हैं कोई को भी शॉर्ट में समझाना है। बड़े-बड़े मेले अदि लगते हैं, बच्चे जानते हैं सर्विस करने लिए वास्तव में एक चित्र ही बस है। भल गोले का चित्र हो तो भी हर्जा नहीं है। बाप, ड्रामा और झाड़ का अथवा कल्प वृक्ष का और 84 के चक्र का राज़ समझाते हैं। ब्रह्मा द्वारा बाप का यह वर्सा मिलता है। यह भी अच्छी रीति क्लीयर है। इस चित्र में सब आ जाता है और इतने सब चित्रों की दरकार ही नहीं है। यही दो चित्र बहुत बड़े-बड़े अक्षरों के हों। लिखत भी हो।

3] यह चित्र खास बड़े-बड़े बनने चाहिए। मुख्य चित्र हैं ना। बहुत बड़े-बड़े अक्षर हो तो मुनष्य कहेंगे बी.के. ने इतने बड़े चित्र बनाये हैं, जरूर कुछ नॉलेज है। तो जहाँ-तहाँ तुम्हारे भी बड़े-बड़े चित्र लगे हुए हों तो पूछेंगे यह क्या है? बोलो, इतने बड़े चित्र तुम्हारे समझने के लिए बनाये हैं। इसमें क्लीयर लिखा हुआ है, बेहद का वर्सा इन्हों को था। कल की बात है, आज वह नहीं है क्यों 84 पुनर्जन्म लेते-लेते नीचे आ गये हैं। सतोप्रधान से तमोप्रधान तो बनना ही है। ज्ञान और भक्ति, पूज्य और पुजारी का खेल है ना। आधा-आधा में बिल्कुल पूरा खेल बना हुआ है। तो ऐसे बड़े-बड़े चित्र बनाने की हिम्मत चाहिए। सर्विस का भी शौक चाहिए। देहली के तो कोने-कोने में सर्विस करनी है। मेले मलाखड़े में तो बहुत लोग जाते हैं वहाँ तुमको यह चित्र ही काम में आयेंगे। त्रिमूर्ति, गोला यह है मुख्य। यह बहुत अच्छी चीज है, अन्धे के आगे जैसे आइना है। अन्धों को पढ़ाया जाता है। पढ़ती तो आत्मा है ना। परन्तु आत्मा के आरगन्स छोटे हैं, तो उनको पढ़ाने के लिए चित्र आदि दिखाये जाते हैं। फिर थोड़े-बड़े होते हैं तो दुनिया का नक्शा दिखाते हैं। फिर वह सारा नक्शा बुद्धि में रहता है। अभी तुम्हारी बुद्धि में सारा यह ड्रामा का चक्र है, इतने सब धर्म हैं, कैसे-कैसे